CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

2008-2022 | **15 वर्ष हल प्रश्न-पत्र**
सिविल सेवा मुख्य परीक्षा

राजनीति विज्ञान

एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध

प्रश्नोत्तर रूप में

सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित

15 वर्ष (2008-2022)

अध्यायवार मुख्य परीक्षा हल प्रश्न-पत्र

राजनीति विज्ञान एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध

प्रश्नोत्तर रूप में

सिविल सेवा परीक्षा के लिए

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग तथा अन्य समकक्ष प्रतियोगी
परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी

संपादकः एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
लेखन एवं प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

पुस्तक के संबंध में

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित विगत 15 वर्षों (2008-2022) के प्रश्नों का अध्यायवार हल

पुस्तक के मूल्य को पाठकों के पहुंच तक बनाये रखने तथा पृष्ठ संख्या को सीमित रखने हेतु पूर्व के दो वर्षों (2006-2007) के प्रश्नों को पुस्तक से हटाया जा रहा है। यह सामग्री chronicleindia.in पर पाठकों के लिए निःशुल्क उपलब्ध होगी।

प्रश्नों को हल करने की प्रकृतिः पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर को मॉडल हल के रूप में दिया गया है। प्रश्नों को हल करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि उत्तर सारगर्भित हो, तथा पूछे गए प्रश्नों के अनुरूप हो। पुस्तक में प्रश्नों के इतर भी विशिष्ट जानकारी को उत्तर में समाहित किया गया है, ताकि अभ्यर्थी इसका उपयोग न सिर्फ हल प्रश्न पत्र के रूप में, बल्कि अध्ययन सामग्री के रूप में भी कर सकें।

पुस्तक का उपयोग कैसे करें?: इस पुस्तक का उपयोग अभ्यर्थी अपने उत्तर लेखन शैली में सुधार लाने तथा प्रश्नों की प्रवृति व प्रकृति को समझने के लिये कर सकते हैं। किसी भी परीक्षा के विगत वर्षों के प्रश्न इसमें सबसे लाभदायक होते हैं। पुस्तक में दी गई सामग्री का इस्तेमाल बिंदुवार, निश्चित शब्द सीमा का पालन, उप-शीर्षक एवं आरेख आदि का प्रयोग अभ्यर्थी अपने उत्तर लेखन शैली के अभ्यास हेतु आधुनिक परिपेक्ष में कर सकते हैं। पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर उसके सम्बंधित वर्ष के अनुसार ही दिया गया है।

राजनीति विज्ञान-एक वैकल्पिक विषय के रूप में: हाल के वर्षों में सिविल सेवा की परीक्षा हेतु उपलब्ध विभिन्न वैकल्पिक विषयों के पाठ्यक्रमों में अत्यधिक बदलाव हुए हैं एवं इस बदलाव के पश्चात 'राजनीति विज्ञान' विषय की लोकप्रियता एक वैकल्पिक विषय के रूप में काफी तेजी से बढ़ी है। इस विषय की लोकप्रियता का एक सबसे महत्वपूर्ण कारण इसका राज्य, समाज, राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में घटने वाली राजनैतिक व अन्य घटनाओं का अवलोकन, अनुशीलन कर, अपने अभिमत का निर्माण करने की संकल्पना पर आधारित होना है, जिसका अध्ययन कर अभ्यर्थी अपनी स्वयं की विचारधारा विकसित कर सकता है। एक बार समझ विकसित हो जाने पर इस विषय में रटने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस विषय की दूसरी विशेषता है सही रणनीति की मदद से न्यूनतम समय में तैयारी, ताकि अच्छे अंक भी हासिल हों और कोई जोखिम भी न रहे। राजनीति विज्ञान विषय का अध्ययन आपके दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है, जिससे आप आधारभूत जानकारी के साथ, राजनीतिक क्षेत्र से सम्बन्धित सैद्धान्तिक, संस्थागत व व्यवहारिक पहलुओं व उनमें आने वाले त्वरित परिवर्तनों को प्रेरित करने वाले कारकों को समझ सकने की वैज्ञानिक दृष्टि पाते हैं। यह दृष्टि आपको न सिर्फ सामान्य अध्ययन बल्कि साक्षात्कार में भी अच्छे अंक लाने में सहयोग करता है।

यह पुस्तक छात्रों को संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा के आलावा राज्य लोक सेवा आयोगों (उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, एवं झारखण्ड) के बदले हुए पाठ्यक्रम में आयोजित होने वाले सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के राजनीति विज्ञान एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध के प्रश्न पत्र की तैयारी में उपयोगी साबित होगा।

संपादक

अनुक्रमणिका

विषयवार हल प्रश्न-पत्र : 2008-2022

प्रथम प्रश्न – पत्र

राजनैतिक सिद्धांत एवं भारतीय राजनीति

1. **राजनीतिक सिद्धांत : अर्थ एवं उपागम** 1-10

2. **राज्य के सिद्धांत** 11-27
   - उदारवादी, नवउदारवादी, मार्क्सवादी, बहुवादी, पश्च-उपनिवेशी एवं नारी-अधिकारवादी

3. **न्याय** 28-32
   - रॉल्स के न्याय के सिद्धांत के विशेष संदर्भ में न्याय के संप्रत्यय एवं इसके समुदायवादी समालोचक

4. **समानता** 33-37
   - सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक, समानता तथा स्वतंत्रता के बीच संबंधा, सकारात्मक कार्य

5. **अधिकार** 38-45
   - अर्थ एवं सिद्धांत, विभिन्न प्रकार के अधिकार, मानवाधिकार की संकल्पना

6. **लोकतंत्र** 46-55
   - शास्त्रीय और समकालीन सिद्धांत

7. **शक्ति, प्रधान्य, विचारधारा और वैधता की संकल्पना** 56-60

8. **राजनीतिक विचारधारा** 61-71
   - उदारवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद, फासीवाद, गांधीवाद और नारी-अधिकारवाद

9. **भारतीय राजनीतिक चिंतन** 72-81
   - धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और बौद्ध परंपराएं; सर सैयद अहमद खान, श्री अरविंद, एम.के. गांधी, बी.आर. अम्बेडकर, एम.एन. रॉय

10. **पाश्चात्य राजनैतिक चिंतन** 82-101
    - प्लेटो अरस्तू, मैकियावेली, हाब्स, लॉक, जॉन, एस. मिल, मार्क्स, ग्राम्स्की, हान्ना आरेन्ट

भारतीय शासन एवं राजनीति

1. **भारतीय राष्ट्रवाद** 102–111
   - भारत के स्वतंत्रता संग्राम की राजनीतिक रणनीतियां
   (क) भारत के स्वाधीनता संग्राम की राजनैतिक कार्यनीतियां; संविधानवाद से जन सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो; उग्रवादी एवं क्रांतिकारी आंदोलन, किसान एवं कामगार आंदोलन
   (ख) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य : उदारवादी, समाजवादी एवं मार्क्सवादी; उग्र मानवतावादी एवं दलित

2. **भारत के संविधान का निर्माण** 112–115
   - ब्रिटिश शासन का रिक्थ; विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य।

3. **भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएं** 116–130
   - प्रस्तावना, मौलिक अधिकार तथा कर्त्तव्य नीति निर्देशक सिद्धांत, संसदीय प्रणाली एवं संशोधन प्रक्रिया; न्यायिक पुनर्विलोकन एवं मूल संरचना सिद्धांत

4. **केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के प्रधान अंग** 131–140
   (क) केंद्र सरकार के प्रधान अंग : कार्यपालिका, विधायिका एवं सर्वोच्च न्यायालय की विचारित भूमिका एवं वास्तविक कार्य प्रणाली
   (ख) राज्य सरकार के प्रधान अंग : कार्यपालिका, विधायिका एवं उच्च न्यायालयों की विचारित भूमिका एवं वास्तविक कार्य प्रणाली

5. **आधारिक लोकतंत्र** 141–146
   - पंचायती राज एवं नगर शासन; 73वें एवं 74वें संशोधनों का महत्व; आधारिक आंदालन

6. **सांविधिक संस्थाएं/आयोग** 147–159
   - निर्वाचन आयोग; नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, वित्त आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग

7. **संघराज्य पद्धति** 160–168
   - सांविधानिक उपबंध, केन्द्र राज्य संबंधों का बदलता स्वरूप, एकीकरणवादी प्रवृत्तियां एवं क्षेत्रीय आकांक्षाएं; अंतर-राज्य विवाद

8. **योजना और आर्थिक विकास** 169–175
   - नेहरूवादी एवं गांधीवादी परिप्रेक्ष्य, योजना की भूमिका एवं निजी क्षेत्र, हरित क्रांति, भूमि सुधार एवं कृषि संबंध, उदारीकरण एवं आर्थक सुधार

9. **भारतीय राजनीति में जाति, धर्म एवं नृजातीयता** 176–184

10. **दल प्रणाली** 185–193
    - राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दल, दलों के वैचारिक एवं सामाजिक आधार, बहुदलीय राजनीति के स्वरूप, दबाव समूह, निर्वाचक आचरण की प्रवृत्तियां, विधायकों के बदलते समाजिक-आर्थिक स्वरूप

11. **सामाजिक आंदोलन** 194–201
    - नागरिक स्वतंत्राएं एवं मानवाधिकार आंदोलन; महिला आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन

द्वितीय प्रश्न – पत्र

तुलनात्मक राजनीति तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध

1. **तुलनात्मक राजनीति** 202–208
   - स्वरूप एवं प्रमुख उपागम; राजनैनिक अर्थव्यवस्था एवं राजनैनिक समाजशास्त्री परिप्रेक्ष्य; तुलनात्मक प्रक्रिया की सीमाएं

2. **तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राज्य** 209–215
   - पूंजीवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं में राज्य के बदलते स्वरूप एवं उनकी विशेषताएं तथा उन्नत औद्योगिक एवं विकासशील समाज

3. **राजनैतिक प्रतिनिधान एवं सहभागिता** 216–222
   - उन्नत औद्योगिक एवं विकासशील सभाओं में राजनैतिक दल, दबाव समूह एवं सामाजिक आंदोलन

4. **भूमंडलीकरण** 223–232
   - विकसित और विकासशील समाजों से प्राप्त अनुक्रियाएं

5. **अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के उपागम** 233–244
   - आदर्शवादी, यथार्थवादी, मार्क्सवादी, प्रकार्यवादी एवं प्रणाली सिद्धांत

6. **अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आधारभूत संकल्पनाएं** 245–257
   - राष्ट्रीय हित, सुरक्षा एवं शक्ति; शक्ति संतुलन एवं प्रतिरोध; पर-राष्ट्रीय कर्त्ता एवं सामूहिक सुरक्षा; विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एवं भूमंडलीकरण

7. **बदलती अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था :** 258–268

   (क) महाशक्तियों का उदय : कार्यनीतिक एवं वैचारिक द्विधुरीयता, शास्त्रीकरण की होड़ एवं शीत युद्ध; नाभिकीय खतरा

8. **अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का उद्‌भव** 269–276
   - ब्रेटनवुड से विश्व व्यापार संगठन तक; समाजवादी अर्थव्यवस्थाएं तथा पारम्परिक आर्थिक सहायता परिषद (CMEA); नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की तृतीय विश्व की मांग; विश्व अर्थव्यवस्था का भूमंडलीकरण

9. **संयुक्त राष्ट्र** 277–290
   - विचारित भूमिका एवं वास्तविक लेखा-जोखा; विशेषीकृत संयुक्त राष्ट्र अभिकरण-लक्ष्य एवं कार्यकरण; संयुक्त राष्ट्र सुधारों की आवश्यकता

10. **विश्व राजनीति का क्षेत्रीयकरण** 291–300
    - यूरोपीय संघ, आसियान, एपीईसी, सार्क, नाफ्टा

11. **समकालीन वैश्विक सरोकार** 301–317
    - लोकतंत्र, मानवाधिकार, पर्यावरण, लिंग न्याय, आंतकवाद, नाभिकीय प्रसार

भारत तथा विश्व

1. **भारतीय विदेश नीति** 318–336
   - विदेशी नीति के निर्धारक; नीति बनाने की संस्थाएं; निरंतरता एवं परिवर्तन
2. **गुट निरपेक्षता आंदोलन को भारत का योगदान** 337–341
   - विभिन्न चरण; वर्तमान भूमिका
3. **भारत एवं दक्षिण एशिया** 342–356
   (क) क्षेत्रीय सहयोग : SAARC–पिछले निष्पादन एवं भावी प्रत्याशाएं
   (ख) दक्षिण एशिया मुक्त व्यपार क्षेत्र के रूप में
   (ग) भारत की "पूर्व अभिमुख" नीति
   (घ) क्षेत्रीय सहयोग की बाधाएं : नदी जल विवाद; अवैध सीमा पार उत्प्रवासन; नृजातीय द्वंद्व एवं उपप्लव; सीमा विवाद
4. **भारत और वैश्विक दक्षिण** 357–363
   - अफ्रीका एवं लातानी अमेरिका के साथ संबंध; एनआईआईओ एवं डब्ल्यूटीओ वार्ताओं के लिए आवश्यक नेतृत्व की भूमिका
5. **भारत और वैश्विक शक्ति केंद्र** 364–383
   - यूएसए, यूरोपीय संघ (ईयू), जापान, चीन और रूस
6. **भारत और संयुक्त राष्ट्र प्रणाली** 384–390
   - संयुक्त राष्ट्र शान्ति अनुरक्षण में भूमिका; सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता की मांग
7. **भारत एवं नाभिकीय प्रश्न** 391–399
   - बदलते प्रत्यक्षण एवं नीति
8. **भारतीय विदेश नीति में हाल के विकास** 400–416
   - अफगानिस्तान में हाल के संकट पर भारत की स्थिति; इराक एवं पश्चिम; यूएस एवं इजराइल के साथ बढ़ते संबंध; नई विश्व व्यवस्था की दृष्टि

प्रथम प्रश्न पत्र

राजनैनिक सिंद्धात एवं भारतीय राजनीति

1 राजनीतिक सिद्धांत : अर्थ एवं उपागम

प्र. व्यवस्था उपागम (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: राजनीति विज्ञान में लोक प्रशासन, चुनाव और अन्य विषय शामिल हैं। व्यवस्था उपागम की संकल्पना का अर्थ है, समाज के विभिन्न घटक एक साथ कैसे काम करते हैं कि समग्र समाज एक समूह में कार्य कर सके। उदाहरण के लिए, अदालतों को विधायी निकायों के रूप में एक प्रणाली के रूप में देखा जा सकता है। ये विभिन्न प्रणालियाँ परस्पर क्रिया करती हैं, जिससे समाज में राजनीति अधिक प्रभावी हो जाती है।

- समाज स्वयं एक व्यवस्था है, जिसका निर्माण राजनीतिक व्यवस्था के अतिरिक्त अन्य व्यवस्थाओं जैसे आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक और जैविक व्यवस्थाओं से होता है। ये सभी व्यवस्थाएँ एक-दूसरे को प्रभावित करती रहती है।
- राजनीतिक व्यवस्था अन्य व्यवस्थाओं से अलग और पूर्ण नहीं है। व्यक्ति का राजनीतिक आचरण न केवल उसके राजनीतिक मूल्यों अथवा प्रतिमानों से प्रभावित होता है, वरन् रक्त संबंधी धार्मिक सम्बन्ध, आर्थिक क्रियाओं तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों से भी प्रभावित होता है।
- व्यवस्था का अर्थ है- "मानवीय सम्बन्धों का स्वरूप"। कोई भी मानवीय सम्बन्ध की संरचना 'राजनीतिक व्यवस्था' बन जाती हैं यदि उसके अन्तर्गत शक्ति, नियम और सत्ता के तत्व दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

प्र. सांस्कृतिक सापेक्षवादः

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: सांस्कृतिक सापेक्षवाद की संकल्पना का अर्थ है कि सभी मान्यताएँ, रीति-रिवाज और नैतिकता अपने स्वयं के सामाजिक सन्दर्भ में एक व्यक्ति के प्रति सापेक्ष या सम्बन्धित हैं। यानि 'सही' और 'गलत' संस्कृति-विशेष हैं; जो एक समाज में नैतिक माना जाता है, वह दूसरे में अनैतिक माना जा सकता है, क्योंकि नैतिकता का कोई सार्वभौमिक मापदण्ड अस्तित्व में नहीं है, इसलिए किसी के पास दूसरे समाज के रीति-रिवाजों की जाँच करने का कोई अधिकार नहीं है।

- आधुनिक नृविज्ञान में सांस्कृतिक सापेक्षवाद व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। सांस्कृतिक सापेक्षवादियों का मानना है कि सभी संस्कृतियाँ अपने अधिकार में योग्य हैं और समान मूल्य की हैं। संस्कृतियों की विविधता, यहाँ तक कि विरोधाभासी नैतिक विश्वासों को, सही और गलत या अच्छे और बुरे शब्दों के सन्दर्भ में नहीं माना जा सकता है।
- सांस्कृतिक सापेक्षवाद, नैतिक सापेक्षतावाद के साथ बहुत अधिक निकटता से सम्बन्धित है, जो सत्य को पूर्ण नहीं, अपितु पुष्टि किए जाने के रूप में देखता है। जो बात सही और गलत को निर्मित करती है, उसे केवल व्यक्ति या समाज के द्वारा ही निर्धारित किया जाता है, क्योंकि सत्य वस्तुनिष्ठ अर्थात् उद्देश्यपरक नहीं है, इसलिए कोई भी वस्तुनिष्ठ मापदण्ड नहीं हो सकता, जो कि सभी संस्कृतियों के ऊपर लागू हो जाए। यह कोई नहीं कह सकता है कि एक व्यक्ति सही है या गलत है; यह व्यक्तिगत विचार की विषय-वस्तु है और कोई समाज दूसरे समाज के ऊपर दोष नहीं लगा सकता है।

प्र. ''स्थायी रूप से क्रांति'':

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: स्थायी क्रांति एक क्रांतिकारी वर्ग की रणनीति है, जो स्वतंत्र रूप से और समाज के विरोधी वर्गों के साथ समझौता या गठबंधन के बिना अपने हितों का पीछा करती है।

- मार्क्सवादी सिद्धांत के भीतर एक शब्द के रूप में, यह पहली बार 1850 की शुरुआत में कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा गढ़ा गया था, लेकिन तब से इसका उपयोग विभिन्न सिद्धांतकारों द्वारा विभिन्न अवधारणाओं को संदर्भित करने के लिए किया गया है, विशेष रूप से लियोन ट्रॉट्स्की।

2

राज्य के सिद्धांत

प्र. वर्तमान में नव-उदारवाद के आधिपत्य को समुदाय, संस्कृति तथा राष्ट्र जैसे कारक कमजोर करते हैं। विवेचना कीजिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: नवउदारवाद एक नीति मॉडल है, जिसमें राजनीति और अर्थशास्त्र दोनों शामिल हैं। यह निजी उद्यम का समर्थन करता है और आर्थिक कारकों के नियंत्रण को सरकार से निजी क्षेत्र में स्थानांतरित करना चाहता है।

- कई नवउदारवादी नीतियां मुक्त बाजार पूंजीवाद के कुशल कामकाज से संबंधित हैं और सरकारी खर्च, सरकारी विनियमन सार्वजनिक स्वामित्व को सीमित करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- नवउदारवाद अक्सर 1979 से 1990 तक यूके के प्रधान मंत्री मार्गरेट थैचर (और 1975 से 1990 तक कंजर्वेटिव पार्टी के नेता) और 1981 से 1989 तक यू.एस. के 40वें राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के नेतृत्व से जुड़ा हुआ है। हाल ही में, नवउदारवाद को सामाजिक कार्यक्रमों पर सरकारी खर्च में कटौती करने के प्रयासों से जोड़ा गया है।
- नवउदारवाद एक राजनीतिक और आर्थिक दर्शन है; जो मुक्त व्यापार, विनियमन, वैश्वीकरण और सरकारी खर्च में कमी पर जोर देता है।
- लाईसेज-फेयर नामक अर्थशास्त्री का प्रस्ताव है कि निरंतर आर्थिक विकास से तकनीकी नवाचार, मुक्त बाजार का विस्तार और सीमित राज्य हस्तक्षेप होगा।
- हालांकि हाल के दिनों में कई देशों में ऐसी प्रवृत्तियां देखने को मिल रही हैं, जो कहीं न कहीं नवउदारवाद के प्रभुत्व को काम कर रही है जैसे कई देश राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर संरक्षणवाद को बढ़ावा दे रहे हैं।
- वहीं बढ़ता समुदायवाद भी नवउदारवाद को कमजोर कर रहा है, क्योंकि यह मुक्त व्यापार का विरोधी है। इसके अलावा कई देशों की संस्कृति भी ऐसी है, जो नवउदारवाद की नीतियों यथा मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण का समर्थन नहीं करती हैं।

निष्कर्ष: इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि समुदाय, संस्कृति और राष्ट्र जैसे कारक नवउदारवाद के अधिपत्य के लिए चुनौती हैं।

प्र. लोकतंत्र का अभिजन सिद्धांत 'लोगों के शासन' के रूप में लोकतंत्र की संभावना को नकारता है। स्पष्ट कीजिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: लोकतन्त्र उदारवादी सिद्धांत को व्यवहारिक रूप प्रदान करने की व्यवस्था के रूप में अपनाया गया और अन्ततः एक सर्वमान्य सिद्धांत बन गया। परन्तु लोकतन्त्र को व्यवहारिक रूप प्रदान करने और उसके संचालन को लेकर कई विकल्प उभर कर सामने आये उनके बीच मतभेद भी सामने आये।

लोकतन्त्र के मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार उदारवादी सिद्धांत पूंजीवादी हितों का पोषण करता है।

- विचारधारात्मक भ्रांति पैदा करता है और वर्ग-विभाजन को स्थायित्व प्रदान करता है। लेनिन ने उसे अल्पमत का शासन कहा। मार्क्सवाद लोकतन्त्र को संस्थाओं की अपेक्षा लोकतन्त्र की भावना को महत्व देता है। मार्क्सवाद के अनुसार, सर्वहारा का अधिनायकत्व ठोस लोकतन्त्र है तथा तर्कसंगत उत्पादन प्रणाली, अलगाव पर विजय द्वारा सच्चा लोकतन्त्र स्थापित किया जा सकता है।
- विशिष्टवर्गीय सिद्धांत नेतृत्व शक्ति पर जनता की अपेक्षा ज्यादा बल देता है और जनता को सरकार चुनने की आजादी देता है। उनके अनुसार विशिष्ट वर्गों का प्रतिस्पर्द्धा ही लोकतन्त्र का अनुरक्षण करता है।
- लोकतन्त्र का बहुलवादी सिद्धांत विशिष्ट वर्ग के अलोकतान्त्रिक तत्वों के प्रति प्रतिक्रिया थी। उनका मानना था कि समाज में शक्ति को धारण करने वाले समूहों के मध्य शक्ति का विकेन्द्रण है और विशिष्ट जन मात्र अम्पायर की भांति है। स्वायत्त समूह आपसी प्रतिस्पर्द्धा द्वारा लोकतन्त्र का पोषण करते हैं।
- 1960 के दशक में वामपंथी विचारधारा के एक समूह द्वारा जनसहभागिता को व्यापक करके सरकार व नागरिकों के मध्य परस्पर क्रिया, प्रतिक्रिया को बढ़ावा देकर लोकतन्त्र के आकार को व्यापक करने का प्रयास किया गया।
- इस विचारधारा का समर्थन पेंटमेन आदि द्वारा किया गया। इसी समय जॉन राल्स, युर्गेन हैवरमास ने विमर्शात्मक लोकतन्त्र का सिद्धांत दिया, जो क्लासिकल लोकतन्त्र की 'प्रतिबद्धर्ता' की धारणा को चुनौती देते हुए व्यक्तियों को अपनी सूझबूझ के अनुसार तर्कसंगत नीति अपनाने के लिए आपसी विचार-विमर्श पर बल देता है।
- उधर उदारवादी लोकतन्त्र में भी वाद-विवाद और विरोधाभाष है। लोकतन्त्र में व्यक्तिगत मत व बहुमत में विरोध की स्थिति बनी रहती है। स्वतंत्रता और समानता के बीच विरोधाभाव होता है तथा राजनैतिक स्तर पर लोकतंत्र व आर्थिक स्तर पर पूंजीवाद एक प्रत्यक्ष विरोधाभाष है।

भारतीय शासन एवं राजनीति

1

भारतीय राष्ट्रवाद

प्र. स्वतंत्रता-पूर्व काल में भारत में श्रमिक आन्दोलन का विश्लेषण कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: भारत में आधुनिक मजदूर वर्ग का उदय 19वीं शताब्दी में औपनिवेशिक शासन के तहत पूंजीवाद के आगमन के साथ हुआ। यह श्रम के अपेक्षाकृत आधुनिक संगठन और श्रम के लिए अपेक्षाकृत मुक्त बाजार के अर्थ में एक आधुनिक मजदूर वर्ग था।

- यह विकास आधुनिक कारखानों, रेलवे, डॉकयार्ड, सड़कों और भवनों से संबंधित निर्माण गतिविधियों की स्थापना के कारण हुआ था। बागान और रेलवे भारतीय उपमहाद्वीप में औपनिवेशिक पूंजीवाद के युग की शुरुआत करने वाले शुरुआती उद्यम थे।
- बंदरगाह शहर बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के केंद्र बन गए। 19वीं सदी के अंत में बंबई में कपास मिलें, कलकत्ता में जूट मिलें और मद्रास में कई कारखाने स्थापित किए गए।
- इसी तरह के विकास अहमदाबाद, कानपुर, सोलापुर और नागपुर शहरों में हुए। भारत की पहली जूट मिल 1854 में कलकत्ता में एक स्कॉटिश उद्यमी द्वारा स्थापित की गई थी। सूती मिलों का स्वामित्व भारतीय उद्यमियों के पास था, जबकि जूट का स्वामित्व लंबे समय तक विदेशियों के पास था।
- भारत में श्रमिक आंदोलन को निम्नलिखित चरणों के माध्यम से समझा जा सकता है:

1900 से पूर्व का चरण:

- इस अवधि के दौरान श्रमिकों द्वारा कई विरोध प्रदर्शन किए गए परंतु ये आन्दोलन तात्कालिक आर्थिक शिकायतों पर आधारित एवं अव्यवस्थित प्रकृति के थे।
- सोराबजी शापूरजी, नारायण मेघाजी लोखंडे जैसे कई समाजसेवी, श्रमिकों की परिस्थितियों में सुधार करने हेतु आगे आए। हालांकि, उनके द्वारा किए गए प्रयासों ने एक संगठित मजदूर वर्ग के आंदोलन का प्रतिनिधित्व नहीं किया।

1901-1930 का चरण:

- स्वदेशी लहर (1903-1908) के दौरान, श्रमिक आंदोलन अधिक संगठित हो गया था। परंतु स्वदेशी आंदोलन की समाप्ति के साथ ही श्रमिक आंदोलन भी समाप्त होने लगा।
- वर्ष 1920 में, ब्रिटिश और भारतीय उद्यमों के विरुद्ध श्रमिक वर्गों के अधिकारों की रक्षा करने हेतु अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) नामक एक राष्ट्रीय स्तर के संगठन की स्थापना की गई।
- इस संगठन ने मुख्यधारा की राष्ट्रवादी राजनीति में भी भाग लिया, परंतु बाद में यह पूर्ण रूप से आर्थिक मुद्दों पर केन्द्रित हो गया।
- 1930 के दशक में, विभिन्न वामपंथी विचारधाराओं के एकीकरण ने मजदूर संघ आंदोलन पर गहरा साम्यवादी प्रभाव डाला, परंतु सरकार के आक्रामक रवैये और आंदोलन की साम्यवादी शाखा के अलग होने से आंदोलन को एक गहरा झटका लगा।

1931 से 1947 के दौरान:

- साम्यवादियों द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा में कार्य करने की अपनी नीति में परिवर्तन किया गया। इस कारण श्रमिकों ने 1931 से 1936 के मध्य राष्ट्रीय आंदोलन में भाग नहीं लिया।
- 1937-1939 की अवधि के दौरान प्रांतीय स्वायत्तता प्रदान करने, लोकप्रिय मंत्रालयों के गठन और नागरिक स्वतंत्रताओं में वृद्धि के परिणामस्वरूप कई मजदूर संघ संगठनों का उदय हुआ।
- इसी अवधि के दौरान साम्यवादियों द्वारा अपनी पहले की नीति को त्याग दिया गया और वे राष्ट्रवादी राजनीति की मुख्यधारा में शामिल हो गए।
- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् आई राजनीतिक लहर के दौरान मजदूर वर्ग की गतिविधियों में एक आश्चर्यजनक पुनरुत्थान हुआ तथा शांतिपूर्ण ढंग से आयोजित होने वाली सभाएं और प्रदर्शन हिंसक संघर्षों में परिवर्तित हो गए।

निष्कर्ष : वास्तव में शिक्षित मध्यमवर्गीय राजनीतिज्ञों द्वारा संचालित राष्ट्रवादी या वामपंथी राजनीति के प्रति वे न तो संवेदनहीन थे और न उनसे दूर रहे, लेकिन उनका समर्थन सशर्त था। जिस प्रकार भारतीय लोकतंत्र, अशिक्षा और भ्रष्टाचार के कारण अभी भी बैशाखियों पर खड़ा है, ठीक उसी तरह मजदूर आंदोलन भी है।

प्र. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की प्रकृति के मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य की विवेचना कीजिए।(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2021)

उत्तर: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य राजनीति और विचारधारा से जुड़े वर्गीय नजरिये से संबंधित है।

2

भारत के संविधान का निर्माण

प्र. भारतीय संविधान की उद्देशिका अपने में 'सामाजिक समझौते' को दर्शाती है। व्याख्या कीजिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: 'प्रस्तावना' शब्द का तात्पर्य संविधान के परिचय या प्रस्तावना से है। भारत के संविधान की प्रस्तावना लोगों की आकांक्षाओं की विशेषताओं को समाहित करता है और उस राज्य की प्रकृति की पहचान करने के आदर्शों को निर्धारित करता है, जिसे संविधान बनाने का इरादा रखता है और यह एक समतावादी समाज तथा एक प्रगतिशील राष्ट्र के मौलिक दर्शन का प्रतीक है। प्रस्तावना के शब्द एक साथ आध्यात्मिक व व्यावहारिक हैं एवं उन उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं, जिन पर इस देश की नींव रखी गई थी।

- प्रस्तावना को सभी अनुच्छेदों के मसौदा तैयार करने और एक गहरी और दिलचस्प बहस के बाद शामिल किया गया था; इसीलिए, प्रस्तावना में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द अत्यंत कीमती है। रेबेरुबारी मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यह भी कहा गया था कि 'प्रस्तावना संविधान निर्माताओं के दिमाग को खोलने की कुंजी है।
- सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत भारत के राज्य की कानूनी प्रणाली में अंतर्निहित है, जो देश की स्थापना के सबसे महत्वपूर्ण वाक्य के साथ प्रमाणित है। सामाजिक अनुबंध की जॉन लॉक की व्याख्या शायद भारतीय संविधान की प्रकृति और यह कैसे राज्य की स्थापना करती है तथा लोगों के साथ कैसा व्यवहार करती है, यह समझाने के लिए सबसे उपयुक्त है।
- सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत अधिकारों की उत्पत्ति के महान प्रश्न को हल करता है, यह इस विचार को उलट देता है कि केवल राजा, भगवान का प्रतिनिधि ही इस दुनिया में अधिकारों के साथ निहित है और उसके द्वारा अपनी भूमि के लोगों को वितरित किया जाता है।
- आधुनिक लोकतांत्रिक और गणतंत्र न्यायशास्त्र में कहा गया है कि अधिकार प्रकृति में होते हैं और सभी मनुष्यों के पास उनके जन्म के अवसर पर ही होते हैं। आत्मरक्षा और अस्तित्व के इन अधिकारों ने संपत्ति के विचार के आविष्कार के साथ खुद को जटिल बना लिया है।

प्र. भारतीय संविधान के निर्माण को 'सामाजिक क्रांति' की ओर एक प्रयास के परिप्रेक्ष्य में वर्णित किया जाता है। टिप्पणी कीजिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: जब हम स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं तो हम स्वतंत्रता से जुड़े तथ्य के सन्दर्भ में सोचते हैं कि हम ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त हो गए थे और किसी विदेशी भूमि के शासन के अधीन नहीं हैं। हम इस बारे में सोचते हैं कि भारत कैसे अपनी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक नियति निर्धारित कर सकता है, कैसे वह विश्व मामलों पर स्वतंत्र रुख अपनाता है।

- हालाँकि, स्वतंत्रता का एक पहलू जिसे हम शायद ही कभी सार्थक रूप से याद करते हैं वह है; स्वतंत्रता आंदोलन, जिसने हमें स्वतंत्रता दिलाई । निश्चित रूप से, हमारे सामाजिक अध्ययन और नागरिक शास्त्र वर्गों ने हमारे भीतर उस वीरता और बलिदान की भावना का संचार किया, जो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने सन्निहित किया था और उन घटनाओं के क्रम को निर्धारित किया, जिसके कारण 15 अगस्त, 1947 को हम स्वतंत्र हुए। लेकिन क्या हम पूरी तरह से इसकी सराहना करते हैं और क्या हम समझते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता इतना खास और विशिष्ट है?
- सबसे पहले, विश्व इतिहास में शायद ही कभी अहिंसा और सामूहिक कार्रवाई को एक साथ किया गया हो। हिंसा हमेशा एक राजनीतिक परिणाम की ओर बड़े पैमाने पर लामबंदी के साथ, संपार्श्विकता के रूप में या एक निश्चित रणनीति के रूप में रही है। जबकि यह निश्चित रूप से भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का एक हिस्सा था, जो आश्वस्त था कि हिंसा स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्राथमिक उपकरण था, इस विचार की भारत की राजनीतिक मुख्यधारा के बीच कीमत नहीं थी। हमारे आंदोलन की प्रतिभा यह थी कि इसने अहिंसा को सामूहिक कार्रवाई के साथ जोड़ दिया।
- यह स्वतंत्रता आंदोलन के राजनीतिक मंथन में था कि भारत का संविधान मुख्य रूप से बना था। यह आंदोलन के मूल्यों और राजनीतिक प्रथाओं द्वारा सूचित किया गया था। आंदोलन के नेताओं, जिनमें से कई संविधान सभा के सदस्य बने, ने हमारे संवैधानिक गणतंत्र को डिजाइन करने के लिए अपने अनुभवों और शिक्षाओं का उपयोग किया। जब इन नेताओं को ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार द्वारा मनमाने ढंग से गिरफ्तार, कैद और बुनियादी नागरिक स्वतंत्रता से वंचित किया गया था, तब स्वतंत्रता और नागरिक स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए संविधान के प्रावधान उनके दिमाग में आकार ले रहे थे।

प्र. "भारत का संविधान एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जो संवैधानिक पूर्ववृत्तों से समृद्ध है।" टिप्पणी कीजिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2021)

उत्तर: भारतीय स्वतंत्रता के दौरान भारतीय संविधान की आवश्यकता महसूस हुई और 1934 में साम्यवाद आंदोलन के प्रणेता

द्वितीय प्रश्न पत्र

तुलनात्मक राजनीति तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध

1

तुलनात्मक राजनीति

प्र. राजनीति विज्ञान के अध्ययन में तुलनात्मक प्रणाली की मुख्य सीमाओं का विवेचना कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: प्रायोगिक, सांख्यिकीय और केस स्टडी जैसे तुलना के अलावा राजनीति की समीक्षा करने के भिन्न तरीके हैं। उन सभी के अपने-अपने फायदे और नुकसान हैं। तुलना एक लोकप्रिय शोध तकनीक है, जिसके कई लाभ और व्यापक अनुप्रयोग हैं।

- तुलनात्मक दृष्टिकोण को कई शोधकर्ताओं द्वारा एक प्रकार के मूल्यांकन से संबंधित बताया गया है, जो एक विचारधारा या अन्य के साथ गठबंधन की गई किसी खोजी योजना के विपरीत है। इसे किसी अन्य द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने की संभावना हो सकती है, जिसका उपयोग उन्हीं अन्य लोगों की खोज करने के लिए किया जा सकता है, जो समान सामान्य प्रवृत्ति (गेरिंग 2008) की व्याख्या करेंगे।
- इसके अतिरिक्त, कीटी (2008) ने कहा कि तुलनात्मक दृष्टिकोण मौजूदा प्रमुख वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका उपयोग एक व्यक्ति सिद्धांतों को नियंत्रित करने और एक से अधिक चर के सहसंबंधों का विश्लेषण करने के लिए कर सकता है, जबकि सभी अपरिवर्तनीयता को बनाए रखता है, जो हाल ही में कारकों को बदल सकता है।
- यद्यपि राजनीति विज्ञान में तुलनात्मक दृष्टिकोण को उसके सिद्धांत के साक्ष्य से जोड़ने व इसे एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में बढ़ाने में लाभप्रद माना जाता है, फिर भी कई बाधाएं हैं जो इसकी संभावनाओं को सीमित करती हैं और इसकी उपयोगिता को कम कर सकती हैं (डेनियल कारमानी, 2014)।
- तुलनात्मकवादी आमतौर पर देशों की राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न घटक भागों की तुलना करते हैं तथा मतभेदों और कुछ प्रवृत्तियों की खोज करने का प्रयास करते हैं।

➢ तुलना में निम्नलिखित बुनियादी संचालन शामिल हैं:

- तुलना करने के लिए चीजों की एक सूची संकलित करना,
- उन्हें छांटना और वर्गीकृत करना और अंततः,
- तुलना का एक बुनियादी कार्य करना और प्रासंगिक निष्कर्ष निकालना।

निष्कर्ष: विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों की तुलना करने के लिए तुलनात्मक पद्धति लागू की जा सकती है और इसका उपयोग समय के साथ राजनीतिक प्रणालियों की तुलना करने के लिए भी किया जा सकता है।

प्र. राजनीति के तुलनात्मक विश्लेषण के राजनीतिक अर्थव्यवस्था उपागम की विवेचना कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2021)

उत्तर: तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम में संविधान एवं सरकार के अध्ययन के बनाए राजनीतिक एवं आर्थिक संरचना के अध्ययन पर बल दिया गया। इसलिए राजनीतिक अर्थशास्त्र का विचार राजनीतिक समाजशास्त्र के निकट प्रतीत होता है।

राजनीतिक अर्थशास्त्र के द्वारा आर्गेन्सकी ने वृद्धि और विकास के विभिन्न चरणों की खोज (Stages of growth) की बात की, जिनके अनुसार राज्य का विकास निम्नलिखित चरणों से होकर गुजरता है-

(i) एकीकरण- राष्ट्र - राज्यों का एकीकरण
(ii) औद्योगिकरण-उत्पादन के तरीके में बदलाव
(iii) कल्याण - कल्याणकारी राज्य
(iv) प्रचुरता/संपन्नता-राज्य द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है।

विद्वान चिलकोटे ने अपनी किताब Theories of Comperative Politics में राजनीतिक अर्थशास्त्र को निम्न रूप में चित्रित किया है- इनके अनुसार राजनीतिक अर्थशास्त्र के अध्ययन का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय संपत्ति में वृद्धि करना है। इनकी मान्यता के अनुसार मनुष्य मूलतः स्वार्थी होता है। इसलिए व्यक्ति के स्वभाव को नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है।